

# ऋग्वेद

मण्डल १, अनुवाक १, सूक्त १ ।

अष्टक १, अध्याय १, वर्ग १ - २ ।

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

## Rigveda

**Maṇḍala 1, Anuvaaka 1, Sookta 1.  
Aṣṭaka 1, Adhyaaya 1, Varga 1 - 2.**

**Translated by: Sañjay Mohan Mittal**

There are two independent systems in place for classifying the 10522 Mantras from the R̥gveda.

The first system has the Mantras broadly classified in Maṇḍalas. Each Maṇḍala has Anuvaakas which are further divided into Sooktas. However it is noteworthy that the Sooktas are numbered independently within a Maṇḍala and their numbering do not reset at the switchover of Anuvaakas. Due to this, many scholars consider Anuvaaka to be redundant and do not use them in their translations. There are a total of 10 Maṇḍalas, 85 Anuvaakas and 1028 Sooktas in the R̥gveda. The sizes of the Maṇḍalas vary considerably between 429 Mantras to 1976 Mantras. The sizes of the Sooktas vary from 1 Mantra to 58 Mantras.

The second system tries to evenly distribute the Mantras between 8 Aṣṭakas which are further divided into 8 Adhyaayas each. These 64 Adhyaayas are further subdivided into 2024 Vargas. The normal size of a Varga is five Mantras, however, it varies from one to twelve Mantras with either extremes being rare.

Even though the second system does not have the Sookta classification, it honors the sanctity of a Sookta. One Sookta belongs to only one Aṣṭaka and one Adhyaaya. The Mantras from a Sookta may be further grouped into multiple Vargas. The Vargas however, do not mix Mantras from different Sooktas.

Nowadays, Maṇḍala / Anuvaaka / Sookta classification is more popular and has been used in this translation as well. However, the Aṣṭaka / Adhyaaya / Varga is mentioned in the page header for reference, if needed.

सारांश

इस सूक्त में परम् पिता परमेश्वर की तुलना अन्धकार नाशक अग्नि से की गई है; वह परमेश्वर जो इस संसार का पालनकर्ता है, जो अपने सर्वश्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश द्वारा हमें सद् कर्म की ओर प्रेरित करता है ताकि हम उत्तम धनादि प्राप्त कर खुशहाल बने और मोक्ष को प्राप्त करें ।

प्रथम वर्ग का आरम्भ होता है ।

प्रथम मन्त्र में ईश्वर के दिव्य गुणों का वर्णन है ।

मधुच्छन्दा ऋषिः। अग्निर्देवता । २४ अक्षराणि । आर्षी गायत्री छन्दः । षड्जः स्वरः ।

**अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥१॥** ऋग् १:१:१:१, साम ६०५

अग्निम् । ईळे । पुरःऽहितम् । यज्ञस्य । देवम् । ऋत्विजम् ॥ होतारम् । रत्नऽधातमम् ॥१॥

हम (ऋत्विजम्) सभी ऋतुओं में पूजनीय, ज्ञानस्वरूप, (देवम्) दिव्य गुण वाले (अग्निम्) प्रकाशवान् ईश्वर की (ईळे) स्तुति करते हैं । (पुरः) संसार के (हितम्) हित के लिए सृष्टि से पहले से विद्यमान ईश्वर ही (यज्ञस्य) सृष्टि रचना व ज्ञान का (होतारम्) निमित्त कारक और (रत्न) रत्न के समान चमकते ग्रहों वाले ब्रह्माण्ड का (धातमम्) रचयिता व धारण करने वाला है ।

दूसरे मन्त्र में हमारी शक्तियाँ बढ़ाने के लिए प्रार्थना है ।

मधुच्छन्दा ऋषिः। अग्निर्देवता । २३ अक्षराणि । पिपीलिकामध्या निचृदार्षी गायत्री छन्दः । षड्जः स्वरः।

**अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत । स देवाँ एह वक्षति ॥२॥**

ऋग् १:१:१:२

अग्निः । पूर्वेभिः । ऋषिभिः । ईड्यः । नूतनैः । उत ॥ सः । देवान् । आ । इह । वक्षति ॥२॥

(ईड्यः) पूजनीय (अग्निः) ऊर्जा व प्रकाश के स्रोत को (पूर्वेभिः) पूर्णता को प्राप्त किए हुए प्राचीन (ऋषिभिः) ऋषिओं ने (उत) और (नूतनैः) वर्तमान ज्ञानियों ने ध्यान में पाया । (सः) वह ईश्वर (इह) इस संसार में (देवान्) दिव्य ज्ञान, दूरदृष्टि व बल हमारे (आ) समीप ला, हमारी (वक्षति) शक्तियाँ बढ़ा हमें कृतार्थ करे ।

तीसरे मन्त्र में यश और ऐश्वर्य बढ़ाने के लिए प्रार्थना है ।

मधुच्छन्दा ऋषिः। अग्निर्देवता । २४ अक्षराणि । आर्षी गायत्री छन्दः । षड्जः स्वरः ।

**अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवेदिवे । यशसं वीरवत्तमम् ॥३॥**

ऋग् १:१:१:३

अग्निना । रयिम् । अश्नवत् । पोषम् । एव । दिवेऽदिवे ॥ यशसम् । वीरवत्ऽतमम् ॥३॥

### Synopsis

This composition metaphorically compares God with the radiant fire that removes darkness. God is the Universal Father, who sustains this universe, provides illumination in the form of the best of the best eternal knowledge in order to help us perform noble deeds and attain righteous wealth, prosperity and bliss.

Here begins the first Varga.

In the first mantra the sage explains the divinity of the fire.

ṛiṣhiḥ madhuchchandaah, devataa agniḥ, vowels 24, chhandah aarṣhee gaayatree, svarah ṣhadjah.

#### **1. agnimeele purohitañ yajñasya devamṛitvijam, hotaaram ratnadhaatamam.**

Rig 1:1:1:1, Saama 605

agnim eeḷe purohitam yajñasya devam ṛitvijam, hotaaram ratna-dhaatamam.

(eeḷe) We pray to God, (agnim) the embodiment of knowledge, (devam) one with divine qualities, (ṛitvijam) to be worshiped in all seasons i.e. all the time, (purohitam) who existed even before the creation for the benefit of every being, (hotaaram) who is the provider and sustainer of (yajñasya) all kinds of knowledge and (ratna-dhaatamam) all of the celestial bodies, that shine like jewels and decorate the Cosmos.

In the second mantra the sage offers a prayer for increasing our capabilities.

ṛiṣhiḥ madhuchchandaah, devataa agniḥ, vowels 23, chhandah pipeelikaamadhyaa nichṛid aarṣhee gaayatree, svarah ṣhadjah.

#### **2. agniḥ poorvebhirṛiṣhibhireedyo nootanairuta, sa devaan̐ eha vakṣhati.**

Rig 1:1:1:2

agniḥ poorvebhiḥ ṛiṣhibhiḥ eedyah nootanaḥ uta, saḥ devaan aa iha vakṣhati.

(agniḥ) The lord of light and power (eedyah) worthy of our worship, is discovered via meditation (nootanaḥ) by virtuous vaidik scholars through new ideas (uta) as well as (poorvebhiḥ) through age old principles established (ṛiṣhibhiḥ) by sages. May (saḥ) he (God) (vakṣhati) increase our capabilities and (aa) bring us closer to (devaan) divine vision, knowledge and strength (iha) in this world.

In the third mantra the sage offers a prayer for increasing our wealth and fame.

ṛiṣhiḥ madhuchchandaah, devataa agniḥ, vowels 24, chhandah aarṣhee gaayatree, svarah ṣhadjah.

#### **3. agninaa rayimashnavatpoṣhameva divedive, yashasam veeravattamam.**

Rig 1:1:1:3

agninaa rayim ashnavat poṣham eva dive-dive, yashasam veeravat-tamam.

(अग्निना) ब्रह्माण्ड के प्रकाश व ऊर्जा से हमें (दिवेऽदिवे) प्रतिदिन अपने शरीर और मन के (पोषम्) पोषण (एव) के लिए (वीरवत् तमम्) सर्वश्रेष्ठ वीरों द्वारा वांछित (रयिम्) अखण्ड ऐश्वर्य और (यशसम्) यश (अश्रवत्) प्राप्त हो ।

चौथे मन्त्र में विद्वानों के मार्गदर्शन के महत्त्व का वर्णन है ।

मधुच्छन्दा ऋषिः। अग्निर्देवता । २४ अक्षराणि । आर्षी गायत्री छन्दः । षड्जः स्वरः ।

**अग्ने॑ यं य॒ज्ञम॑ध्व॒रं वि॒श्वतः॑ परि॒भूर॑सि॑ । स इ॒द्वेषु॑ गच्छति ॥४॥**

ऋग् १:१:१:४

अग्ने॑ । यम् । य॒ज्ञम् । अध्व॒रम् । विश्वतः॑ । परि॒भूः । असि॑ ॥ सः । इत् । दे॒वेषु॑ । ग॒च्छति ॥४॥

हे (अग्ने) ईश्वर ! आपने (यम्) अपने (विश्वतः) सर्वव्यापी रूप से (अध्वरम्) विकार रहित (यज्ञम्) सर्वहितकारी ज्ञान की (परि) रचना कर उसको (भूः) फैलाया (असि) है । (दे॒वेषु) विद्वानों के मार्गदर्शन में (सः) इस (इत्) ज्ञान को पाकर हम सुख और समृद्धि की ओर (गच्छति) जाते हैं ।

पाँचवे मन्त्र में भी विद्वानों के सत्संग के महत्त्व का वर्णन है ।

मधुच्छन्दा ऋषिः। अग्निर्देवता । २४ अक्षराणि । आर्षी गायत्री छन्दः । षड्जः स्वरः ।

**अ॒ग्निर्हो॑ता॒ क॒विक्र॑तुः स॒त्यश्चि॒त्रश्र॑वस्तमः । दे॒वो दे॒वेभि॒रा ग॑मत् ॥५॥**

ऋग् १:१:१:५

अ॒ग्निः । हो॑ता । क॒विऽक्र॑तुः । स॒त्यः । चि॒त्रश्र॑वऽस्तमः ॥ दे॒वः । दे॒वेभिः॑ । आ । ग॑मत् ॥५॥

(अग्निः) स्वतः प्रकाशवान्, (सत्यः) विनाशरहित, (कवि) छन्दमय जगत की (क्रतुः) रचना करने वाले व उसका (होता) पालन करने वाले, अपनी (तमः) दिव्य (श्रवः) श्रवणशक्ति से सभी को (चित्र) साफ सुनने वाले (देवः) ईश्वर का आशीर्वाद हमें (दे॒वेभिः) विद्वानों के (आ) सत्संग से (गमत्) प्राप्त होता है ।

प्रथम वर्ग समाप्त हुआ । दूसरे वर्ग का आरम्भ होता है ।

छठे मन्त्र में ईश्वर के दयालु स्वभाव का वर्णन है ।

मधुच्छन्दा ऋषिः। अग्निर्देवता । २३ अक्षराणि । निचृदार्षी गायत्री छन्दः । षड्जः स्वरः ।

**य॒द॒ङ्ग दा॒शुषे॑ त्वमग्ने॑ भ॒द्रं क॑रिष्यसि॑ । तवे॒त्तत्स॒त्यम॑ङ्गि॒रः ॥६॥**

ऋग् १:१:१:६

यत् । अ॒ङ्ग । दा॒शुषे॑ । त्वम् । अग्ने॑ । भ॒द्रम् । क॑रिष्यसि॑ ॥ तव॑ । इत् । तत् । स॒त्यम् । अ॒ङ्गि॒रः ॥६॥

(अग्ने) हे जीवनदायी प्रकाशवान् ईश्वर! (अ॒ङ्ग) हे सबके मित्र! (त्वम्) आप उस जीव का (भ॒द्रम्) कल्याण (करिष्यसि) करते हैं (यत्) जो (दा॒शुषे) परमार्थ भाव से प्रेरित हो उत्तम कर्म करता है । (अ॒ङ्गि॒रः) हे प्राणदायक! (तत्) यह (इत्) ही (तव) आपका (स॒त्यम्) सच्चा स्वभाव है ।

**By the virtue of (*agninaa*) the light and energy of the universe, may (*poṣhameva*) for the nourishment of our body and mind (*dive-dive*) everyday (*ashnavat*) we attain (*rayim*) the never depleting righteous wealth, desired by the (*veera-vat-tamam*) bravest and may that (*yashasam*) lead us towards honor and fame.**

In the fourth mantra the sage explains the importance of the scholars and the leaders.  
**ṛiṣhiḥ** madhuchchhandaah, **devataa** agniḥ, **vowels** 24, **chhandaḥ** aarṣhee gaayatree, **svaraḥ** ṣhaḍjaḥ.

**4. agne yañ yajñamadhvaram vishvataḥ paribhoorasi,  
sa iddeveṣhu gachchhati.**

Ṛig 1:1:1:4

agne yam yajñam adhvaram vishvataḥ pari-bhooḥ asi, saḥ it deveṣhu gachchhati.

**(agne) O Lord! Through your (*vishvataḥ*) omnipresence you (*asi*) have (*paribhooḥ*) created and sustained (*yam*) the (*yajñam*) beneficial knowledge that is (*adhvaram*) devoid of any flaws. (*saḥ it*) That knowledge expounded by (*deveṣhu*) the noblest scholars (*gachchhati*) spreads happiness and prosperity.**

In the fifth mantra the sage expands on the importance of the company of the scholars.  
**ṛiṣhiḥ** madhuchchhandaah, **devataa** agniḥ, **vowels** 24, **chhandaḥ** aarṣhee gaayatree, **svaraḥ** ṣhaḍjaḥ.

**5. agnirhotaa kavikratuḥ satyashchitrashravastamaḥ,  
devo devebhiraam gamat.**

Ṛig 1:1:1:5

agniḥ hotaa kavi-kratuḥ satyaḥ chitrashravaḥ-tamaḥ, devaḥ devebhiḥ aa gamat.

**(agniḥ) The radiant lord of the universe, (*hotaa*) the sustainer and (*kratuḥ*) the creator of the (*kavi*) rhythms of the cosmos, who is (*satyaḥ*) indestructible and possesses (*tamaḥ*) divine (*shravaḥ*) capabilities to hear everything (*chitra*) clearly, listens to all. His (*devaḥ*) divine blessings are (*aa gamat*) obtained through the (*devebhiḥ*) company of the virtuous scholars.**

Here ends the first Varga and the second Varga begins.

In the sixth mantra the sage talks about the benevolent nature of God.

**ṛiṣhiḥ** madhuchchhandaah, **devataa** agniḥ, **vowels** 23, **chhandaḥ** nichṛid aarṣhee gaayatree, **svaraḥ** ṣhaḍjaḥ.

**6. yadaṅga daashuṣhe tvamagne bhadraṁ kariṣhyasi,  
tavattatsatyamaṅgiraḥ.**

Ṛig 1:1:1:6

yat aṅga daashuṣhe tvam agne bhadram kariṣhyasi, tava it tat satyam aṅgiraḥ.

**(agne) O Light of life! (*aṅga*) O Friend of all! (*tvam*) You Bless (*yat*) that person who (*kariṣhyasi*) does (*bhadram*) benevolent deeds through (*daashuṣhe*) selfless giving. (*aṅgiraḥ*) Dear as breath of life, (*tat*) this is (*tava it*) your (*satyam*) true nature.**

सातवे मन्त्र में ईश्वर की शरण के लिए प्रार्थना है ।

मधुच्छन्दा ऋषिः। अग्निर्देवता । २४ अक्षराणि । आर्षी गायत्री छन्दः । षड्जः स्वरः ।

उप॑ त्वा॒ऽग्ने दि॒वेदि॑वे॒ दोषा॑वस्तर्धिया व॒यम् । नमो॑ भर॑न्त॒ एम॑सि ॥७॥

ऋग् १:१:१:७, यजुः ३:२२, साम १४

उप । त्वा । अग्ने । दिवेऽदिवे । दोषाऽवस्तः । धिया । वयम् ॥ नमः । भरन्तः । आ । इमसि ॥७॥

(अग्ने) हे सब के उपासित ईश्वर! (वयम्) हम (दिवेऽदिवे) प्रतिदिन, (दोषा) रात दिन (वस्तः) निरन्तर अपने (धिया) विचारों और कर्मों से (त्वा) आपको (नमः) नमन कर और (भरन्तः) पूज कर, आपकी (उप) शरण को (आ इमसि) प्राप्त होते हैं ।

आठवे मन्त्र में ईश्वर को मार्गदर्शक के रूप में बताया गया है ।

मधुच्छन्दा ऋषिः। अग्निर्देवता । २२ अक्षराणि । यवमध्या विराडार्षी गायत्री छन्दः । षड्जः स्वरः ।

राज॑न्तमध्व॒राणां॑ गो॒पामृ॑तस्य दी॒दिवि॑म् । वर्ध॑मानं॒ स्वे दमे॑ ॥८॥

ऋग् १:१:१:८, यजुः ३:२३

राजन्तम् । अध्वराणाम् । गोपाम् । ऋतस्य । दीदिविम् ॥ वर्धमानम् । स्वे । दमे ॥८॥

(गोपाम्) हे पृथिवी व प्रकृति के रक्षक! आप अपने (स्वे) स्वतः (राजन्तम्) प्रकाशित (ऋतस्य) शाश्वत विधान से हमारे लिए (अध्वराणाम्) पापरहित उत्तम कर्मों के मार्ग को (दीदिविम्) प्रकाशित कर, हमारे (दमे) सुखों को (वर्धमानम्) बढ़ाते हैं ।

नौवे मन्त्र में पुनः ईश्वर के मार्गदर्शक होने का वर्णन है ।

मधुच्छन्दा ऋषिः। अग्निर्देवता । २२ अक्षराणि । विराडार्षी गायत्री छन्दः । षड्जः स्वरः ।

स नः॑ पि॒तेव॑ स॒नवे॑ऽग्ने॒ स॒पाय॑नो भ॒व । सच॑स्वा नः स्व॒स्तये॑ ॥९॥

ऋग् १:१:१:९, यजुः ३:२४

सः । नः । पिताऽइव । सूनवे । अग्ने । सुऽउपायनः । भव ॥ सचस्व । नः । स्वस्तये ॥९॥

(अग्ने) हे ज्ञानस्वरूप ईश्वर! (इव) जैसे (पिता) पिता अपनी सन्तान को सदा (सूनवे) उत्तम ज्ञान देता है वैसे ही (सः) वह हमारा परम् पिता हमारी समृद्धि के लिए (नः) हमें (सु) उत्तम (उपायनः) उपायों का ज्ञान देने वाला (भव) हो । (स्वस्तये) सबके सुख के लिए (नः) हमें इस ज्ञान से (सचस्व) मिलाये ।

दूसरा वर्ग समाप्त हुआ ।

## Rigveda - Maṇḍala 1 Anuvaaka 1 Sookta 1; Aṣṭaka 1 Adhyaaya 1 Varga 1 - 2

In the seventh mantra the sage offers prayers seeking God's refuge.

**ṛiṣhiḥ** madhuchchandaah, **devataa** agniḥ, **vowels** 24, **chhandah** aarṣhee gaayatree, **svarah** ṣhaḍjah.

**7. upa tvaa'gne divedive doṣhaavastardhiyaa vayam,  
namo bharanta emasi.**

Rig 1:1:1:7, Yajuh 3.22, Saama 14

upa tvaa agne dive-dive doṣhaa-vastah dhiyaa vayam, namah bharantah aa imasi.

**O (agne) omniscient Lord, worshipped by everyone! (dive-dive) Everyday, (doṣhaa-vastah) night and day, (vayam) we (upa) come to (tvaa) you and (aa imasi) seek your refuge, (namah) bowing (bharantah) prayerfully with (dhiyaa) our thoughts and actions.**

In the eighth mantra the sage acknowledges God as the ultimate guide.

**ṛiṣhiḥ** madhuchchandaah, **devataa** agniḥ, **vowels** 22, **chhandah** yavamadhyaa viraaḍ aarṣhee gaayatree, **svarah** ṣhaḍjah.

**8. raajantamadhvaraanaam gopaamritasya deedivim,  
vardhamaanam sve dame.**

Rig 1:1:1:8, Yajuh 3.23

raajantam adhvaraanaam gopaam ritasya deedivim, vardhamaanam sve dame.

**(gopaam) O Protector of earth and environment! Through (sve) self (raajantam) luminous, (ritasya) divine and universal law, you (deedivim) illuminate our pathways and guide us towards (adhvaraanaam) noble actions that are devoid of any flaws, and help us attain (vardhamaanam) ever growing (dame) bliss.**

In the ninth mantra the sage again declares God as the ultimate guide.

**ṛiṣhiḥ** madhuchchandaah, **devataa** agniḥ, **vowels** 22, **chhandah** viraaḍ aarṣhee gaayatree, **svarah** ṣhaḍjah.

**9. sa nah piteva soonave'gne soopaayano bhava,  
sachasvaa nah svastaye.**

Rig 1:1:1:9, Yajuh 3.24

sah nah pitaa iva soonave agne soopaayanah bhava, sachasvaa nah svastaye.

**(agne) O Embodiment of knowledge! (pitaa iva) As a father (soonave) imparts best knowledge to his children (sah) you also (bhava) become the provider of the (soopaayanah) knowledge that helps (nah) us attain righteous wealth and prosperity. Please continue to (sachasvaa) unite (nah) us with such knowledge that brings (svastaye) universal happiness.**

Here ends the second Varga.